International WOMEN'S DAY #GiveToGain

नारी शक्ति को प्रणाम

नवभारत टीम
- वीरेन्द्र वर्मा
- धर्मेन्द्र चौहान
- शैलेन्द्र कश्यप

शिक्षा युवाओं के लिए सबसे प्रभावी हथियार

यांगचेन भुटिया भारतीय पुलिस सेवा की अधिकारी हैं और मध्यप्रदेश कैडर की अधिकारी के रूप में वर्तमान में इंदौर ग्रामीण जिले की पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्यरत हैं. वे अपनी सख्त कार्यशैली, संवेदनशील पुलिसिंग और अपराध नियंत्रण के लिए जानी जाती हैं.

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक यांगचेन डोलकर भुटिया ने बताया कि भारतीय पुलिस सेवा में आने की प्रेरणा उन्हें देश की पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी के व्यक्तित्व और कार्यशैली से मिली. उन्हें माता-पिता ने बचपन से ही आत्मविश्वास दिया कि वे अपने निर्णय स्वयं लें और उनकी जिम्मेदारी भी निभाएं. ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को साहसी और मजबूत बताते हुए कहा कि जागरूकता की कमी के कारण वे कई समस्याओं का सामना करती हैं, जिन्हें दूर करने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं. साथ ही उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में पुलिस विभाग में महिलाओं की भागीदारी और बढ़ेगी. वहीं युवाओं के लिए शिक्षा को बताया सबसे बड़ा और प्रभावी हथियार. एसपी भूटिया बताती हैं कि उनका लक्ष्य सिविल सेवा में आना था. पुलिस सेवा में आना एक तरह से संयोग रहा. सेवा आवंटन के समय जब उन्हें भारतीय पुलिस सेवा मिली तो उन्होंने इस क्षेत्र को समझना शुरू किया. उनके अनुसार यह बेहद सम्मानजनक और समाज की सेवा का अवसर देने वाला पेशा है. उन्होंने बताया कि उनके परिवार में दूर-दूर तक कोई पुलिस या सिविल सेवा में नहीं था. वे मूल रूप से सिक्किम से हैं, उनके माता-पिता सरकारी सेवा में जरूर थे, लेकिन केंद्रीय सेवाओं में नहीं. माता-पिता ने हमेशा उन्हें आत्मविश्वास दिया कि अपने निर्णय स्वयं लें और उस पर पूरी जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ें. महिला अधिकारियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर उन्होंने कहा कि महिला और पुरुष अधिकारियों के बीच ज्यादा अंतर नहीं है. लेकिन परिवार और करियर के बीच संतुलन बनाना महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत कठिन होता है. समाज की अपेक्षाएं आज भी महिलाओं से घर और परिवार की जिम्मेदारी अधिक निभाने की रहती हैं, जबकि महिलाएं भी पुरुषों की तरह नौकरी और जिम्मेदारियां निभाती हैं.

व्यक्ति का भविष्य उसके निर्णयों पर

युवाओं और विशेषकर युवतियों के लिए संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति का भविष्य उसके निर्णयों पर निर्भर करता है. यदि युवा शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं और अपने लक्ष्य के प्रति मेहनत करते हैं, तो वे जीवन में बेहतर अवसर हासिल कर सकते हैं. उनके अनुसार शिक्षा ही वह सबसे बड़ा साधन है, जो युवाओं को अपने भविष्य का रास्ता चुनने की ताकत देता है.

महिलाएं शहर व देश हित में काम करें

मैंने मेरे नानाजी से प्रेरित होकर वकालत क्षेत्र को चुना है. उनकी इच्छा थी कि घर से कोई एक वकील बने. मैं खंडवा में रहती थी और कलेक्टर ऑफिस में आते-जाते वकीलों को देखती थी. उसी समय मन में आया कि मैं वकील बनूंगी और कक्षा 9वीं में तय कर लिया था कि वकील बनना है. नानाजी वकालत की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाएं थे और उनका सपना था कि परिवार से कोई कानून के क्षेत्र में जाए. उनके सपने को मैंने पूरा किया.

यह कहना है शहर के प्रथम महिला नागरिक जूही पुष्यमित्र भार्गव का. जूही भार्गव कहती है कि महिलाओं, कमजोर और बेसहारा लोगों को कानून के जरिए मदद दिलाने की कोशिश के तहत ही मैंने वकालत की पढ़ाई की है. मुझे एक किस्सा याद है कि एलएलएम के दौरान एक व्यक्ति को चेक बाउंस के मामले में सजा हो गई थी और उनकी पत्नी का भी निधन हो गया. उनके तीन बच्चे थे और मैंने एलएलएम के पढ़ाई के दौरान ही उनकी अपनी जेब से 25 हजार रुपए लगाकर न सिर्फ मदद की, बल्कि उनको दोष मुक्त भी करवाया. इस बात का मुझे गर्व भी है और उनके बड़े बेटे ने मेरे पैसे भी थोड़े थोड़े करके चुकाए. बाद मैंने ही मना कर दिया कि रहने दो और अपनी जिंदगी को बनाओ.

इरादे मजबूत करके आगे बढ़ो

मेरा आज की महिलाओं और लड़कियों से कहना है कि अपने इरादे मजबूत करके आगे बढ़ो. स्वयं जिम्मेदार बनो और शहर एवं देश हित में पर्यावरण और धर्म के प्रति संवेदनशील रहकर काम करने की सीख परिवार के सदस्यों को भी दें और अन्य महिलाओं व सखियों को भी जागरूक करें.

हर महिला अपने व्यक्तित्व को मजबूत बनाए

डॉ. ध्वनि शर्मा का जन्म जूनागढ़, गुजरात में हुआ और पढ़ाई आणंद, गुजरात में हुई. आपने बॉयोटेक्नोलॉजी में पीएच.डी. किया एवं एन.वी. पटेल सांइस कॉलेज, वल्लभ विद्यानगर आणंद में प्राध्यापिका रहीं. बचपन से ही पढ़ाई एवं वाकपटुता में माहिर कॉलेज में मिस पर्सनेलटी रहीं एवं एनसीसी 'सी' सर्टिफिकेट 'ए' गेड फोर गुजरात गर्ल्स बटालियन में सम्मानित हुई. आप गुजरात आणंद जिला भारतीय जनता पार्टी की मंत्री रहीं, गुजरात प्रदेश मंत्री रहीं. बडोदरा लोकसभा की प्रभारी रहीं. फिर भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय मंत्री एवं दिल्ली-हरियाणा, कर्नाटका की प्रभारी रहीं. गुजरात में महिला सशक्तिकरण के कार्य में 10 हजार लड़कियों का व्यक्तित्व विकास से राष्ट्रीय निर्माण का काम करते हुए 50 पॉवरफुल वूमेन गुजरात में सम्मिलित हुई. आपने इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेस की मेम्बर होते हुए पूरे विश्व में भारत का प्रतिनिधित्व किया. अब मालवांचल की ध्वनि के माध्यम से भारत के हृदय मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण की प्रेरणा के साथ हर गांव की महिला से जुड़ने का प्रयास जारी है. राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यों में माता-पिता का आशीर्वाद एवं देश के शीर्षस्थ नेताओं का मार्गदर्शन मिला. गुजरात में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आशीर्वाद मिला एवं मध्यप्रदेश में स्व. अनिल माधव दवे के साथ नर्मदा परिक्रमा में सहभागिता मिली. नर्मदा समग्र एवं पर्यावरण के लिये प्रेरणा मिली. आपने महिला सशक्तिकरण एवं देश प्रथम के विचार के साथ कई पुस्तकें लिखी- जिनमें से प्रेयर ऑफ लाइफ, इंडिया चाइना, सद्भावनानु गुजरात एवं इंडिया चाइना लिखी.

हर महिला दूसरी महिला का ध्यान रखे

महिलाओं को संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि हर महिला अपने व्यक्तित्व को मजबूत बनाये, क्योंकि भारत एक ऐसा देश है जहां हर नवरात्रि में माता (शक्ति) की पूजा होती है. हर देवी अपने चारों हाथों से अपनी जवाबदारियों का निर्वहन करती है. ऐसे ही हर महिला को आगे बढ़ना है. चाहे वो गर्भ में पलती आशा हो, या आंगन में खेलती तुलसी हो, या स्कूल-कॉलेज जाती आकांक्षा हो. या सप्तपदि लेती अभिलाषा हो या सांझ के संतोष में संतोष हो. हर महिला अपने जीवन के पड़ाव में दूसरी महिला का ध्यान रखे और आगे बढ़े. जब महिला आगे बढ़ेगी तो परिवार आगे बढ़ेगा. परिवार आगे बढ़ेगा तो गांव आगे बढ़ेगा और गांव आगे बढ़ेगा तो प्रदेश आगे बढ़ेगा और प्रदेश आगे बढ़ेगा तो देश आगे बढ़ेगा.

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।'

संस्कार, शिक्षा और आत्मरक्षा, सशक्त नारी की सच्ची पहचान

वर्षो से कमजोर और बेसहारा, आदिवासी महिलाओं के लिए काम कर रही ईवा वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन की संचालक भारती मंडोले कहती है कि आज समाज में विकृत मानसिकता और संवेदनहीनता बहुत ज्यादा फैल रही है. इसका परिणाम है कि एक सुबह समाचार देखने में आता है कि मात्र दस दिन की नवजात बच्ची को एक लाख बीस हजार रुपए में बेचने का प्रयास किया जा रहा है, तो मन व्यथित हो उठा. यह समाज की विकृत मानसिकता और संवेदनहीनता को दर्शाता हैं. बच्चियों और महिलाओं के साथ होने वाले दुष्कर्म समाज के नैतिक पतन की ओर इशारा करते है.

ईवा वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन 2010 से महिला उत्थान और सशक्तिकरण के क्षेत्र में सतत कार्यरत है. संस्था का मुख्य उद्देश्य महिलाओं एवं बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि वे आत्मसम्मान के साथ अपने जीवन जी सकें. संस्था द्वारा अभी तक 10,000 से अधिक महिलाओं और बालिकाओं को विविध प्रशिक्षण प्रदान किए जा चुके हैं. विशेष रूप से अल्पशिक्षित एवं आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को रुचि अनुसार सिलाई, ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण, हस्तशिल्प तथा गृह उद्योग के कार्य सिखाए जाते हैं, जिससे स्वरोजगार में सहयोग मिलता है. साथ ही 12वीं या उससे अधिक शिक्षित लड़कियों को विशेष व्यावसायिक प्रशिक्षण के तहत बेसिक कंप्यूटर प्रशिक्षण, टैली तथा पीजीडीसीए पाठ्यक्रम सिखाए जाते हैं. ईवा वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन का मिशन महिलाओं में आत्मविश्वास, जागरूकता और स्वाभिमान का विकास करना भी है.

स्वावलंबन जरूरी

सशक्त समाज के संकल्प के साथ महिला दिवस पर ईवा की ओर से सभी माताओं और बहनों से अपील है कि वे अपनी बेटियों को केवल अच्छे संस्कार ही नहीं, बल्कि आर्थिक स्वावलंबन का पाठ भी पढ़ाए और बेटियों को पराठे के साथ कराटे भी सिखाएं.

ग्रामीण महिलाओं को जोड़ा स्वरोजगार से

नेहा मीना 2014 बैच की एक प्रमुख महिला आईएएस अधिकारी हैं, जो मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले की कलेक्टर के रूप में अपनी उत्कृष्ट सेवाओं और नवाचारों के लिए जानी जाती हैं. नेहा मीना ने करियर की शुरुआत धार में असिस्टेंट कलेक्टर के रूप में की थी. वह बागली में एसडीएम और इंदौर में जिला पंचायत सीईओ भी रही हैं. झाबुआ से पहले वे नीमच में अपर कलेक्टर एडीएम थीं.

आईएएस नेहा मीना को पहले भी उनकी प्रशासनिक कामों के लिए सम्मानित किया जा चुका है. उन्हें 25 जनवरी को 15वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से बेस्ट इलेक्टोरल प्रैक्टिस अवॉर्ड मिला था. इसके अलावा उन्हें नदी संरक्षण पहल के लिए केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय से वेस्ट मैनेजमेंट अवॉर्ड 2020 और चोरल नदी के पुनरुद्धार के लिए राष्ट्रीय जल पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है. इसके अलावा नीमच के पूर्व एडिशनल कलेक्टर के रूप में उन्हें भूमि अभिलेखों के आधुनिकीकरण और गांव के नक्शे और अभिलेखागार को डिजिटल बनाने में उनके योगदान के लिए 18 जुलाई 2023 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से लैंड इक्वल प्लेटिनम अवॉर्ड मिल चुका है. एक अभिनव और डेटा-ड्रिवन अभियान है, जिसे प्रधानमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. कलेक्टर नेहा मीना के मार्गदर्शन में यह पहल, विशेषकर उन बच्चों के लिए वरदान साबित हो रही है जिनके माता-पिता काम के लिए पलायन करते हैं. इन्दौर जिले में सीईओ जिला पंचायत रहते हुए ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ा, झाबुआ कलेक्टर के रूप में वह जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और सरकारी योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुंचाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही हैं.

सशक्त बनकर देश की प्रगति में भागीदारी करें

संदेश देते हुए नेहा मीणा ने कहा कि महिलाएं समाज की शक्ति हैं. शिक्षा, आत्मविश्वास और अवसरों से हर महिला सशक्त बनकर देश की प्रगति में भागीदारी करें.

महिला दिवस एक दिवस नहीं

महिला दिवस केवल एक दिवस या तिथि नहीं,
यह हर सुबह की पहली किरण है।
यह माँ की ममता की ऊष्मा है,
यह बेटी की हँसी का स्पंदन है।
एक दिन के फूलों से क्या होगा,
हर दिन सम्मान जरूरी हो।
उसके सपनों को पंख मिलें,
जब सोच हमारी पूरी हो।

वह घर की नींव, वह जग की शान,
वह श्रम, साहस और त्याग की पहचान।
कभी दुर्गा, कभी सरस्वती,
कभी सीता-सी धैर्यवान।

क्यों सीमित हो उसका उत्सव
सिर्फ एक तारीख के दायरे में?
जब हर दिन उसकी मेहनत चमके
जीवन के हर उजियारे में।

उसे सम्मान, सुरक्षा, अवसर दें,
सपनों को खुला आसमान दें।
महिला दिवस तब सच्चा होगा,
जब हर दिन उसे पहचान दें।

आओ प्रण लें मन से हम
नारी का मान बढ़ाएँगे।
हर दिन होगा महिला दिवस,
जब दीप बराबरी का जलाएँगे।

- डॉ अर्चना श्रीवास्तव 'ओमप्रिया'

कड़ी मेहनत, ईमानदारी और खुद पर भरोसा हर महिला को सफलता देगा

देश की आबादी में 50 प्रतिशत महिलाएं है उनके स्वास्थ को लेकर आज तक कोई रिसर्च नहीं किया गया है. यह माना जाता है कि जो दवाई पुरुषों के लिए बनी है वहीं महिलाओं के लिए भी उपयोगी होगी. यह गलत है, क्योंकि महिलाओं और पुरुषों के शरीर में बहुत अंतर है. सामान्य तौर पर महिलाओं में प्रेगनेंसी होगी, ब्रेस्ट फीडिंग करवाना ही है. मगर इस दौरान उनके शरीर में बीपी या शुगर या अन्य बीमारी होती है, तो यह मान लिया जाता है कि बच्चा होने के बाद खत्म हो जाएगा. मगर ऐसा होता नहीं है. महिलाओं पर रिसर्च नहीं होता है, जो हमारी संस्था वुमन इन्वेंशन कार्डियोलॉजी कर रही है. हम वुमन पेसिफिक रिसर्च जनरल निकाल रहे है, जो दुनिया का पहला और एकमात्र जनरल है, जिसमें सिर्फ महिला रिसर्च को ही प्रमोट कर रहे है.

उक्त बात देश की प्रसिद्ध इंटरवेस्कुलर कार्डियोलॉजी डॉ. सरिता राव ने कही. डॉ. राव ने बेबाकी से बताया कि मुझे मेडिकल साइंस के सबसे कठिन इंटरवेस्कुलर कार्डियोलॉजी क्षेत्र में आने से कई बार रोका गया कि इस क्षेत्र में क्या करोगी, क्योंकि मैं महिला होने के नाते मेन डोमिनेट फील्ड में प्रवेश कर रही थी, जहां सिर्फ 4 प्रतिशत महिलाएं कार्डियोलॉजी में है और 96 प्रतिशत पुरुष है. आप समझ सकते है कि ऐसे पुरुष प्रधान वर्चस्व के साथ काम करना कितना मुश्किल होता है, जिसमें नाममात्र की महिलाए होती है. मैं भेदभाव की बात नहीं कह रही हूं. आज 25 साल से इस फील्ड में हूं, क्योंकि मेरे माता पिता ने मुझे खुले दिमाग के साथ कहा कि जो करना है करो. मैंने परवाह नहीं की ओर आज देश के कार्डियोलॉजी क्षेत्र की प्रतिष्ठित संस्था विनकास्ट की अध्यक्ष हूं, आज हम वुमन इन्वेंशन कार्डियोलॉजी में महिलाओं पर रिसर्च कर रहे है और यंग वुमन कार्डियोलॉजीस्ट को आगे बढ़ा रहे हैं. उनको फेलोशिप दे रहे है. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच उपलब्ध करवा रहे हैं. इस बार हमारी संस्था विनकास्ट की आने वाले दिनों में इंदौर में ही कांफ्रेंस है, जिसमें देश-विदेश से कार्डियोलॉजी फील्ड की डॉक्टर्स आ रही है.

अपने आप पर विश्वास करो

डॉ सरिता राव ने कहा कि मैं महिलाओं को यह संदेश देना चाहती हूं कि आप जिस भी क्षेत्र में जाना चाहती है, उसके लिए अपने आप पर विश्वास करो, दुनिया में कौन क्या बोल रहा है, उस पर ध्यान मत दो और कड़ी मेहनत और ईमानदारी से काम करो. आपकी पढ़ाई ही आपकी मेरिट तय करती है. मेरी राय में कड़ी मेहनत, ईमानदारी और खुद पर विश्वास एवं भरोसे का कोई तोड़ नहीं. तीनों के संगम से सफलता मिलना तय है, कोई रोक नहीं सकता है.

बनता बिगड़ता स्त्री-विमर्श

आज का युग नेपथ्य से बाहर आने का युग है. इसीलिये नई ऊर्जा, नई चेतना से युक्त स्त्रीवादी विमर्श भी स्त्री को प्रभावित करने लगे हैं. परिणाम स्वरूप आज की नारी समाज, इतिनस, साहित्य, संगीत और संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में नए प्रतिमान रच रही है. संघर्षशील होकर आज नारी आर्थिक रूप से भी मजबूत हो रही है. प्रत्येक क्षेत्र में स्थापित होने के बाद भी क्या नारी मानसिक रूप से भयमुक्त और संतुष्ट हो पाई है ?

नारी विषयक नए नए प्रश्न आज एक राष्ट्रीय- समस्या का रूप क्यों लेते जाते हैं, निरन्तर सुविधा भोगी और भौतिक वस्तुओं के प्रति बढ़ते हुए मोह और उसकी उपभोक्तावादी छवि ने क्या उसे उसकी प्रतिष्ठा दिला दी है ? नारी के प्रश्नों को परिभाषित करना क्या आज भी जटिल नहीं है ? यदि सब

कुछ सुखद है, तो फिर महादेवी वर्मा ऐसे जीवन की ओर संकेत क्यों करती है, जिसका एक भी अंश उनका अपना नहीं था -

विस्तृत नभ का कोना-कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना, इतिहास यही
उमड़ी थी कल, मिट आज चली ..

आज नारियों को स्वयं अपनी समस्याओं को समझना होगा. आत्मलाभ की कुन्जी उसे स्वयं ही खोजना होगी. नारी को स्वयं ही अपनी प्रवृत्तियों को संयमित और परिष्कृत करना होगा. समाज और राष्ट्र के लिये कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाली नारी आज भी पुरुष की जीवन सहचरी के रूप में उसकी प्रेरणा बनकर उसे पतन से बचाती हुई माननीय दुर्बलताओं से उठाकर श्रेष्ठता, सत्यता, कलात्मकता और ईश्वर की ओर उन्मुख कर सकती है.

भारतीय स्त्री की कर्मठता, ऊर्जा और उसका अविचलित व्यक्तित्व क्या स्त्री-विमर्शों की अपेक्षा रखने योग्य है ?

डॉ. श्रीमती कमल चतुर्वेदी
सेवानिवृत्त प्रिंसीपल
विदिशा

पुलिस की वर्दी हमेशा रही प्रेरणास्रोत

इंदौर के राजेंद्र नगर क्षेत्र की एसीपी निधि सक्सेना अनुशासित और परिणाम आधारित पुलिसिंग के लिए जानी जाती हैं. उनके नेतृत्व में क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के साथ महिला सुरक्षा को लेकर विशेष पहल की जा रही है. जनसंवाद, मोहल्ला मीटिंग और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से आमजन को पुलिस से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, वहीं महिलाओं और किशोरियों को आत्मरक्षा, हेल्पलाइन नंबरों और उनके कानूनी अधिकारों के प्रति भी जागरूक किया जा रहा है. उनका मानना है कि महिलाओं के आत्मनिर्भर और जागरूक होने से समाज में सुरक्षा का माहौल और मजबूत होता है. एसीपी निधि सक्सेना कहती हैं कि पुलिस वर्दी केवल कानून लागू करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में भरोसा और आत्मविश्वास जगाने का प्रतीक भी है. उनका कहना है कि जब महिलाएं वर्दी में दिखाई देती हैं तो अन्य महिलाओं में भी आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा पैदा होती है. महिला सुरक्षा के लिए पुलिस लगातार जनसंवाद, मोहल्ला मीटिंग और आत्मरक्षा प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम चला रहे हैं, जिससे महिलाओं और किशोरियों को जागरूक और सक्षम बनाया जा सके. उन्होंने आगे कहा कि मेरे लिए पुलिस की वर्दी हमेशा प्रेरणा का स्त्रोत रही है, जब कोई महिला वर्दी में दिखाई देती है तो कई महिलाओं को उससे उम्मीद बंधती है कि वह उनके लिए कुछ बेहतर कर सकती है. समाज में लंबे समय तक महिलाओं को कई तरह की सामाजिक प्रथाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है. ऐसे में मुझे लगा कि महिलाओं को आगे आकर समाज में बदलाव लाने और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए काम करना चाहिए. यही सोच मुझे पुलिस सेवा में लेकर आई. चुनौतियों को लेकर उन्होंने बताया कि पुलिस विभाग में अधिकतर निचला स्टाफ पुरुष होता है. कई बार यह मानसिकता देखने को मिलती है कि महिलाएं कठिन परिस्थितियों को उतनी मजबूती से नहीं संभाल पाएंगी जितना पुरुष संभाल लेते हैं, यही सोच सबसे बड़ी चुनौती है. उन्होंने बताया कि पुलिस विभाग महिलाओं के लिए एक अच्छा और संवेदनशील कार्यक्षेत्र है. यहां पुरुष और महिला के बीच किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाता. आने वाले समय में पुलिस विभाग में महिलाओं की भूमिका और मजबूत होगी.

समाज की सुरक्षा में देना चाहिए योगदान

महिलाओं को संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि पुलिस सेवा समाज की सेवा करने का बड़ा अवसर देती है. यहां रहते हुए हम अपने आसपास के लोगों की मदद कर सकते हैं और उन्हें न्याय दिलाने में भूमिका निभा सकते हैं. इसलिए युवतियों को आगे आकर पुलिस सेवा में शामिल होना चाहिए, आत्मनिर्भर बनना चाहिए और समाज की सुरक्षा में योगदान देना चाहिए.